

खर्चा | By Amit Kalra Meetu

माना मेरा राशन तो बाज़ार से आता है
पर उसका खर्चा खाटू के दरबार से आता है
किसी का मेहनत से या कारोबार से आता है
पर अपना खर्चा खाटू के दरबार से आता है

मांगो या फिर ना मांगो ये ठाकुर सब कुछ जाने है
मेरे मन में क्या है ये तो सब कुछ ही पहचाने है
मेरी ज़रूरत का मुझको निश्चित मिल जाता है
पर अपना खर्चा खाटू के दरबार से आता है

जबसे बना है मेरा सखा वो सब कुछ उसपे छोड़ दिया
मंज़िल अगर कठिन हो तो राहों को उसने मोड़ दिया
बिना पुकारे झट से ठाकुर दौड़ा आता है
पर अपना खर्चा खाटू के दरबार से आता है

कभी हंसाता कभी रुलाता और कभी सताता है
कभी प्रेम से गले लगा कर अपना प्रेम जताता है
जनम जनम से उससे मेरा प्यारा नाता है
पर अपना खर्चा खाटू के दरबार से आता है

<https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%96%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%9a%e0%a4%be-by-amit-kalra-meetu/>